अर्ध शुष्क क्षेत्रों में नीबू की बागवानी

केले और आम के बाद भारत में सिट्रस तीसरी सबसे अधिक बोने वाली फल–फसल है। सिट्रस फलों में कागजी नीबू अपने सुखद स्वाद और औषधीय गुणों के कारण सबसे लोकप्रिय है। भारत में नीबू की बागवानी मुख्य रूप से महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, आसाम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड एवं उत्तराखंड आदि राज्यों में की जाती है। नीबू उत्पादक किसानों को अपनी उपज से अच्छी आय प्राप्त करने के लिए अत्यंत प्रतियोगिताक्षम होने की आवश्यकता है। इसके लिए उत्पादकता में वृद्धि, गुणवत्ता सुधार, फसल सुरक्षा, मूल्य वर्धन एवं उत्पाद विविधीकरण पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। अतः इन बातों को ध्यान में रखते हुए नीबू उत्पादन से संबधित सभी विषयों का विस्तृत वर्णन इस आलेख में किया गया है।

भूमि एवं जलवायु

नीबू की बागवानी सावधानी पूर्वक करनी चाहिए। इनको ऐसी किसी भी मृदा में उगाया जा सकता है, जिसका जल निकास अच्छा होने के साथ–साथ ही उसमें वायु संचार की उचित मात्रा हो तथा मूसला जडों को उचित गहराई तक जाने में कोई अवरोध उत्पन्न न करें। इसके साथ ही साथ पूरे वर्ष भर आन्तरिक जलस्तर 1.5 मी. के बीच बने रहने से नीबू के वृक्ष अधिक वृद्धि करते हैं, अन्यथा आन्तरिक जलस्तर अधिक ऊपर आ जाने से जड़ सडन जैसी बीमारी की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती हैं तथा पौधे सूखने लगते हैं। नीबू का उत्पादन 5.50 से 7.50 पी0 एच0 तक की भूमियों में लिया जा सकता है।

नीबू वर्गीय फल सामान्यतः उपोष्ण जलवायु का पौधा है, परन्तु इसका उत्पादन शुष्क उपोष्ण से उष्ण क्षेत्रों में जहां पर वार्षिक वर्षा 75–250 से.मी. के बीच हो की जा सकती है। उष्ण जलवायु में उपोष्ण जलवायु की तुलना में उत्पादन कम होता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इस तरह की जलवायु में इनके फल वृक्ष सुसुप्तावस्था में चले जाते है तथा फलस्वरूप बंसत ऋतु में नई बढ़वार प्रारंभ होती है एवं इसी के साथ पुष्पन क्रिया प्रारम्भ होती है अतः वर्ष में केवल एक ही बार फल लगते है, जबकि यह प्रक्रिया उष्ण जलवायु में वर्ष भर चलती रहती है इसलिए उत्पादन कम होता है।

उन्नत किस्में

सफल बागवानी हेतु क्षेत्र के अनुसार ही उपयुक्त किस्मों का चयन करना चाहिए। कागजी, साई शरबती, रसराज, जयदेवी, विक्रम प्रमुख एवं सबसे ज्यादा क्षेत्रों में उगायी जाने वाली किस्में हैं।

प्रवर्धन

नीबू का प्रवर्धन बीज एव मुख्य रूप से कायिक विधियों से ही करते हैं। बीज प्रवर्धित पौधों में फल देर से आते हैं, परन्तु वे विपरीत परिस्थितियों के प्रति अधिक सहिष्णु, दीर्घजीवी एवं विषाणु जनित रोगों से मुक्त होते हैं। चुँकि इनके बीजों की भंडारण क्षमता कम होती है, इसलिए यथा शीघ्र ही उठी हुई क्यारियों में बुवाई कर देनी चाहिए। बुवाई से पहले बीजों को थाइरम (2ग्रा0/ली0 पानी) नामक कवक नाशी से उपचारित कर लेना चाहिए। इससे नर्सरी में जड़ विगलन व आर्द्र विगलन नामक बीमारी नही लगती है। बीज की बुआई के लिए वर्षा ऋतु (जून–जुलाई) का समय अच्छा रहता है। यदि नीबू को बीज द्वारा प्रवर्धित करते हैं तो वे 6–9 महीने में रोपण के लिए तैयार हो जाते हैं। परन्तु ज्यादातर 1 वर्ष पुराने बीजू पौधों को रोपण के लिए वरीयता दी जाती है। आजकल गूटी विधि से व्यवसायिक स्तर पर नीबू का प्रवर्धन किया जा रहा है। पौधशाला में समय–समय पर फफूंदनाशक दवा जैसे बावेस्टीन एवं कीटनाशी दवा जैसे मोनोक्रोटोफास का छिड़काव करते रहना चाहिए। कीटनाशकों का छिडकाव इसलिए भी आवश्यक हो जाता

गूटी विधि

हानि करता है। अधिक प्रभाव होने पर मेथायल पैराथियान (मेटासिड) 2 मि.ली. प्रति ली0 पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिडकाव उपयोगी रहता है।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

कैंकर : यह रोग अत्यधिक रूप से कागजी नीबू को प्रभावित करता है। यह एक जीवाणु जनित रोग है, जिसके लक्षण पत्तियों एवं फलों पर गहरे भूरे रंग के धब्बों के रूप में दिखायी पडते हैं। इसके नियंत्रण हेतु 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को 10 ली0 पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर, वर्षा ऋतु के प्रारंभ होते ही करना चाहिए। पर्ण सुरंगी कीट का भी समय से नियन्त्रण करना चाहिए।

ट्रिस्टेजा विषाणु : इस रोग के कारण पेड़ की पत्तिया गिरने लगती हैं, टहनियां ऊपर से सूखने लगती हैं एवं जड़े सडने लगती हैं। प्रभावित पेड़ों पर पुष्प कलिकायें अधिक संख्या में आती हैं और वृक्ष फलों से लदकर सूख जाते हैं। इस रोग का प्रसार प्रभावित मूलवृन्त, सांकुर, डाली एवं माहू से हो सकता है। इस रोग का नियन्त्रण रासायनिक विधियों से संभव नहीं है। इससे बचाव के निम्न उपाय हैं–

1. स्वस्थ और प्रमाणित सांकुर डाली का प्रयोग गूटी हेतु करना चाहिए।
2. प्रतिरोधी मूलवृन्त जैसे– रंगपुर लाइम का प्रयोग करना चाहिए।
3. न्यूसेलर सीडलिंग का प्रयोग करना चाहिए।
4. माहू का उचित समय पर नियन्त्रण करना चाहिए।

सिट्रस डिकलाइन : यह रोग कई कारकों का मिला–जुला प्रभाव है। इसके प्रमुख कारक हैं–पोषक तत्वों की कमी (मुख्यतया सूक्ष्म पोषक तत्व), फाइटोफ्थोरा तथा विगलन, ट्रिस्टेजा विषाणु, हरितन रोग, कीट का प्रकोप, कैंकर का प्रकोप, उचित जल निकास का न होना, उचित बाग प्रबन्ध का न होना इत्यादि। फलस्वरूप फल उत्पादन कम हो जाता है। इसकी रोकथाम के निम्न उपाय हैं–

1. अच्छी जल निकास वाली मृदा का चुनाव।
2. रोग रहित पौधों का चुनाव।
3. प्रतिरोधी, मूलवृन्त जैसे रंगपुर लाइम का प्रयोग।
4. कीट, रोग एवं नेमेटोड से बचाव।
5. अनुमोदित खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग।
6. उचित बाग प्रबन्ध।

डी. एस. मिश्रा, संजय सिंह, ए. के. सिंह एवं विकास यादव
केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र (भाकृअनुप–केशुबासं), वेजलपुर–गुजरात

खजूर की पौष्टिक एवं स्वादिष्ट सब्जी

संतुलित आहार में फलों का सेवन करना विभिन्न प्रकार के शारीरिक विकारों को दूर करने तथा रोग प्रति रोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आवश्यक होता है। खजूर में डोका अवस्था पर पूर्ण पके हुए फल की तुलना में हरे फलों में टैनिन की मात्रा थोड़ी अधिक व शर्करा कम होने के कारण फल मीठे नहीं लगते हैं तथा ताजा खाने में उपयोग नहीं किए जाते हैं। फल गुच्छों में से अलग किए हुए हरे परिपक्व फलों की स्वादिष्ट सब्जी एवं अचार बनाकर उपयोग किया जा सकता है। खजूर फलों में फाइबर, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, अन्य तत्व, विटामिन्स, कार्बोहाइड्रेट्स, आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

खजूर फलों की सब्जी बनाना अन्य सब्जी बनाने जैसा ही है। इसमें फलों को अच्छी तरह से पानी में धोकर, साफकर, दो भागों में काट लिया जाता है। गुठली को निकालकर अगल कर देवें। इन कटे हुए फलों को पानी में 5–7 मिनट तक हल्का उबालें। इसके पश्चात जैसे अन्य सब्जी तैयार की जाती है, उसी प्रकार फ़ायपेन अथवा कड़ाही में तेल, मिर्च–मसाला के साथ धीमी आंच में पकाएं। स्वाद के अनुसार खाद्य तेल, नमक, मसाले, आदि का प्रयोग करें। तैयार सब्जी का स्वाद हल्का मीठा सा लिए हुए परन्तु खाने में स्वादिष्ट होता है।

इस प्रकार अधपके/परिपक्व खजूर फलों से स्वादिष्ट सब्जी और अचार बनाए जा सकते हैं।

डॉ. विनीता सिंह, आयुर्वेद चिकित्सक
करणीनगर (लालगढ), बीकानेर